विज्ञान दिवस विशेष

पहुंचाना होगा विज्ञान को जन-जन तक

❒ हरि कृष्ण आर्य

श्री हरिकृष्ण आर्य आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशासक एवं दक्ष प्रशिक्षक हैं। शिक्षण व अधिगम में सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी के ज्ञाता श्री आर्य कम्प्यूटर कौशल में महारत हासिल है। आपको कम्प्यूटर के क्षेत्र में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त कम्प्यूटर लिटरेसी ऐक्सीलेंस अवार्ड 2004, शिक्षा में आई.टी.सी. के नवाचारी उपयोग के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार 2012 तथा माइक्रोसॉफ्ट द्वारा प्रदत्त अन्तर्राष्ट्रीय इनोवेटिव टीचर लीडरशिप अवार्ड 2012 प्रमुख है। आप शिविरा के नियमित लेखक एवं शुभचिन्तक हैं। **-वरिष्ठ सम्पादक**

विगत शताब्दी को यदि विज्ञान की शताब्दी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पिछली शताब्दी में विज्ञान ने जो चमत्कारी उपलब्धियां हासिल की हैं, उन्हें तत्कालीन सोच के धरातल पर देखा जाए तो ऐसा कभी संभव हो सकेगा, यह अकल्पनीय ही लगता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने पूरी दुनिया को बदल दिया है। दूरियां सिमट गई है। संपूर्ण भूमंडल एक विश्वग्राम में परिवर्तित हो रहा है। भूगर्भ से लेकर धरातलऔर आसमान और बाह्य अंतरिक्ष तक मानव की पहुंच और दखल हो गई है। आज वह सौरमंडल के दूसरे ग्रहों की ओर रुख किए हुए है। वहां मानव बस्तियां बसाए जाने की तैयारी है। सौरमंडल से बाहर जीवन की खोज हेतु यान भेजे जा रहे हैं। ये चीजें जो आज हकीकत हैं, एक सदी पहले के विज्ञान लेखकों के लिए गल्प का विषय हुआ करती थीं। लेकिन वैज्ञानिक क्रांति ने कल्पना को सच्चाई में बदल दिया है। इंसान के हजारों साल के इतिहास में उतना बदलाव नहीं हुआ जितना पिछली शताब्दी में हुआ, मुमकिन है इतना ही इक्कीसवीं सदी के चतुर्थांश में हो जाय। यानी एक पीढ़ी के अंतराल में ही आश्चर्यजनक परिवर्तन देखने को मिलें।

अब अहम प्रश्न यह है क्या इतनी वैज्ञानिक प्रगति के बाद समाज में वैज्ञानिक चेतना और जागरूकता आ पाई है? यदि हां तो कितनी, और नहीं तो क्यों नहीं। अब यह जानना भी आवश्यक होगा कि यह वैज्ञानिक चेतना है क्या? वैज्ञानिक चेतना का अर्थ है रोजमर्रा के जीवन में विज्ञान सम्मत ढंग से सोचने, तर्क करने और घटनाओं तथा प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण करने की प्रवृत्ति का जागरण। आज विज्ञान हमारे घरों में तथा रसोई तक में दाखिल हो चुका है। मिक्सर ग्रांइडर, जूसर, कुकर, इलैक्ट्रिक तथा माइक्रोवेव ओवन, और न जाने क्या-क्या उपकरण आम आदमी के घर की जरूरत हो गए हैं। रेडियो, टी.वी. म्यूजिक सिस्टम, घंडियां, डिजिटल कैलेंडर, कैल्कुलेटर घर-घर में आम होते जा रहे है। संचार के साधनों में बेसिक टेलीफोन, मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन, इंटरनेट, ई-मेल, फैक्स जरूरत बनते जा रहे हैं। दुनिया भर में कहां क्या हो रहा है, इसे जानने के लिए बस एक बटन दबाने भर की जरूरत है। यातायात में तीव्र क्रांति हो गई है घंटे भर में कहीं से कहीं पहुंचा जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र में कितना बदलाव आया है। एक से एक अधुनातन तकनीकों के आ जाने से कठिन से कठिन शल्य क्रिया आसान होती जा रही है। कृत्रिम अंग बनाने लग गए हैं। कृषि के क्षेत्र में जुताई-बुआई से लेकर निराई-गुड़ाई, खरपतवार नियंत्रण, फसल की कटाई और मड़ाई, अन्न भंडारण आदि सभी में यांत्रिक साधनों का प्रयोग हो रहा है। क्या-क्या नहीं बदला है तेजी से। इन आविष्कारों के मूल में कुछ वैज्ञानिक सिद्धांत होते हैं जो सार्वत्रिक होते हैं। एक आम आदमी भी अपने अंतर्मन में इसे कहीं न कहीं महसूस करता है।

आज इतनी वैज्ञानिक प्रगति के बाद भी हम अंधविश्वास में डूबे हुए हैं। हमारे देश का तो कमोबेश हर नागरिक इसकी गिरफ्त में है। चाहे कितना ही बड़ा आदमी हो, बिल्ली रास्ता काट जाए या सामने से कोई छींक दे, तो वह तुरंत गाड़ी से उतर जाता है। आज भी धन और पुत्र प्राप्ति हेतु नरबली की सैकड़ों घटनाएं समाचार के माध्यमों से सुनने को मिलती हैं। लोग अपने बच्चे की बलि तक दे देते हैं। यह अन्धविश्वास की पराकाष्ठा का नमूना है। नर बलि के ज्यादातर शिकार मासूम बच्चे होते हैं। सुदूर ग्रामीण अंचलों में खास कर जनजातीय क्षेत्रों में चुड़ैल और डायन घोषित कर किसी महिला को सरेआम मार डालने या अपमानित करने की घटनाएं किसी के लिए नयी नहीं हैं। भूत-प्रेतों की बातें भी खूब सुनते हैं। तांत्रिकों, ओझाओं और बाबाओं के गारंटी सहित सर्वमनोकामना पूर्ण करने के दावे वाले विज्ञापन देश के प्राय: हर शहर, हर कस्बे में देखने को मिल जाएंगे। ये नौकरी, धंधा, कर्ज मुक्ति, जादू-टोना से लेकर कोर्ट-कचहरी के मामले को भी मनोनुकूल हल करने का दावा करते हैं। यही नहीं इन्हीं के साथ हस्तरेखा देखकर भविष्य बताने वाले भी डेरा डाले सहज मौजूद रहते हैं। एक छोटी-सी खबर जंगल की आग की तरह फैला दी जाती है कि गणेश जी दूध पी रहे हैं। अफवाह फैलती है कि रात को सोए तो पुतले बन जाएंगे, मूर्तियाँ बन जाएंगे तो लोग सारी रात जागते हैं। दीवारों पर हथेलियों की छाप लगा कर भूत-प्रेतों से बचने का उपाय किया जाता है। हम इतनी मामूली-सी विज्ञान की समझ भी लोगों में अभी तक नहीं डाल पाए। विज्ञान युग का यह दूसरा स्याह पहलू है।

हमारे देश का समाज बहुत पहले से ही परंपरावादी रहा है। समय के साथ इसमें रूढ़ियां और दकियानूसी विचारों ने घर कर लिया। यद्यपि यह तथ्य है कि एक समय भारतीय समाज ज्ञान-विज्ञान की पराकाष्ठा पर था जब गणित, चिकित्सा और खगोल-विज्ञान में दुनिया उसका लोहा मानती थी। वह दुनिया की दूसरी सभ्यताओं से कदाचित उच्चतर पायदान पर थी। लेकिन मध्यकाल के दौरान ऐसा सामाजिक संक्रमण का काल आया जब इन विधाओं पर मानों एक तरह से ग्रहण-सा लग गया। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि आधुनिक विज्ञान में भारत का योगदान अत्यल्प है। यूरोपीय नवजागरण से लेकर आज तक की तीन सदियों के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो कार्य हुए हैं उनमें पश्चिम का ही ज्यादातर योगदान है।

कहने को आज हम विज्ञान युग में रह रहें है, किन्तु यह सच है कि हमारी सोच अभी वैज्ञानिक नहीं हो पाई है और हम में वैज्ञानिक जागरूकता का अभाव है। वैज्ञानिक सोच और वैज्ञानिक जागरूकता के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना नितांत आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तर्क आधारित दैनिक जीवन में निर्णय लेने की प्रवृति का मूलाधार होता है। इसमें पक्षपात और पूर्वाग्रहों का कोई स्थान नहीं होता. है। जिस मनुष्य ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात कर लिया है उसका मस्तिष्क अति जिज्ञासु और ग्रहणशील हो जाता है। इसके बाद वह किसी भी बात को आँख मूंद कर स्वीकार नहीं करता बल्कि वह सबसे पहले स्वयं उस मुद्दे पर चिंतन मनन करता है और तदानुसार अपने विवेक से निर्णय लेता है। जीवन के हर मोड़, हर निर्णय में तार्किक ढंग से विचार करना और उस पर चलना ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है। यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण किसी व्यक्ति, समुदाय या समाज में आ गया तो वहां मौजूद अन्धविश्वास स्वत: ही धीरे-धीरे निर्मूल होने लगेंगे।

विज्ञान सत्य का उद्घाटन करता है और प्रकृति तथा उसमें दिन-रात होने वाली घटनाएं सत्य का ही स्वरूप होती हैं। वस्तुत्व: विज्ञान प्रकृति में छिपे रहस्यों पर से पर्दा हटाता है। पर सही मायने में यह इतना आसान काम नहीं है। प्राकृतिक रहस्यों को समझना और उसके बारे में एक व्यक्ति के मन में उठी जिज्ञासा को पूर्ववर्ती अवधारणाओं से जांचना-परखना भी आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहेंगे कि किसी भी तथ्य या नियम को तब तक सच नहीं मानना चाहिए जब तक कि उसकी पूरी जाँच-परख करके उसे सत्यापित नहीं कर लिया जाए। यह वैज्ञानिक विधि का प्रथम चरण है। प्रेक्षण द्वारा आंकड़े एकत्र करना, प्रयोग करना, पूर्ववर्ती अवधारणाओं से तुलनात्मक अध्ययन करना और अंत में किसी विज्ञान सम्मत (तर्कसम्मत) निष्कर्ष पर पहुंचना वैज्ञानिक विधि के अन्य प्रमुख चरण होते हैं। वैज्ञानिक विधि वास्तव में जाँच-पड़ताल की विधि है। इस विधि द्वारा प्रकृति में निहित घटना के होने का कारण जानने की कोशिश की जाती है या पहले से ज्ञात किसी प्राकृतिक/वैज्ञानिक तथ्य में सुधार-संशोधन किया जाता है।

हजारों साल पहले जब विज्ञान और वैज्ञानिक विधि की जानकारी किसी को नहीं थी, उस समय लोग समस्त प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वर से जोड़कर देखते थे और उसी के द्वारा नियंत्रित अलौकिक घटना मानते थे। प्रकृति में होने वाली घटनाओं को लेकर कुछ लोगों के मन में सवाल उठाने लगे। वे उन सवालों का समाधान जानना चाहते थे। कुछ ने वर्षों के अध्ययन-अवलोकन के बाद अपने तार्किक निष्कर्ष भी दिए लेकिन धर्मावलम्बी सत्ता विज्ञान की बात को सिरे से ख़ारिज कराती रही, क्योंकि वे विश्व का नियंत्रक ईश्वर को मानती थी। विज्ञान और धर्म के संघर्ष में ब्रूनो नामक वैज्ञानिक को घोर यातनाएं सहनी पड़ी। आखिर उसे जिन्दा जला दिया गया। सच के लिए उसने मौत की भी परवाह नहीं की। गैलीलियो और चार्ल्स डार्विन को भी सत्य की खोज करने पर धर्मावलम्बियों के घोर विरोध का सामना करना पड़ा था। अभी कुछ ही माह पूर्व अपने इसी प्रयास के चलते महाराष्ट्र के डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

हमारे देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात सबसे पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने की थी। उन्होंने देश में वैज्ञानिक वातावरण के विकास के लिए 1958 में ससंद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति प्रस्तुत की जिसे संसद ने पारित किया। संसद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति पारित करने वाला भारत विश्व का पहला देश है। नेहरू ने देश में आधुनिक विकास के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं की नींव रखी। वे मानते थे कि प्राचीन रुढ़िवादी सोच को बदलने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूरी है।

समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने तथा विज्ञान की गूढ़ जानकारी आम आदमी तक पहुँचाने की विधि को विज्ञान लोकप्रियकरण, विज्ञान संचार, विज्ञान की जन समझ जैसे कई नामों से जाना जाता है। इन सबका अर्थ और उद्देश्य लगभग एक समान है। भारत में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान प्रसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग जैसी सरकारी संस्थाओं के अलावा अनेक गैर राजकीय संगठन और स्वयंसेवी संस्थाएं विज्ञान लोकप्रियकरण का कार्य कर रही हैं।

हाल के वर्षों में सूचना जगत में एक क्रांति-सी आ गई है। बड़े जोर-शोर से कहा जा रहा है कि यह सदी सूचना की सदी है वही समाज, वही राष्ट्र विकास की दौड़ में अव्वल रहेगा जो सूचना के मामले में आगे रहेगा। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लंबी छलांग लगाई है। टी.वी., इंटरनेट और दूसरे माध्यमों ने समाचार जगत का स्वरूप ही बदल दिया है। होना तो यह चाहिए था कि समाचार माध्यमों की पहुंच से लोगों में वैज्ञानिक चेतना का संचार होता. आखिर ये इलेक्ट्रॉनिक साधन स्वयं विज्ञान की देन ही तो हैं। चौबीसों घंटे चलने वाले चैनल अविराम जारी हैं। लेकिन अफसोस कि जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टि जगाने से उनका दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। हाल के सर्वेक्षण के जो परिणाम आए हैं वे उल्टी कहानी कहते हैं। धारावाहिकों में वही पुरानी दकियानूसी बातें, वही भेड़ चाल, वही अंधविश्वासों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम छाए हैं। अब तो बाकायदा इन चैनलों पर लोगों को सुबह-सुबह उनका राशिफल बताया जाता है। वास्तु का इन दिनों बड़ा जोर है। इसमें चीन से आए फेंग सुई ने रही-सही कसर पूरी कर दी है। हमारे समाज में ये चीजें फैशन का रूप ले रही हैं। अब जनता को असुरक्षित, धर्मभीरू और ज्यादा से ज्यादा अवैज्ञानिक बनाने की कवायद हो रही है। देखा-देखी अखबार वालों और पत्रिकाओं ने भी वहीं राह पकड़ ली है। आखिर उन्होंने वैज्ञानिक चेतना जगाने का कोई ठेका थोड़े ही ले रखा है। लोगों को जो पसंद आए, वही परोसो की नीति बाजार में सफलता की नीति है. धारा के विपरीत जाने की जहमत कौन ले।

सुबह-सुबह टी.वी. खोलिए तो सत्संग के नाम पर कोई न कोई प्रवक्ता ज्ञान की गंगा बहाते मिलेगा। आज टी.वी. चैनलों में हर तीसरे चैलन पर कोई न कोई ज्ञानी संसार की निःसारता पर व्याख्यान देते देखा जा सकता है। ये इंसान के इस लोक की कम, परलोक की चिंता ज्यादा करते हैं, आज के दौर में ये तथाकथित गुरु भी हाईटैक हो गए हैं। हवाई जहाज में उड़ते हैं, पंचतारा होटल में ठहरते हैं, महंगी कारों मेंदौड़ते हैं और संचार के नवीनतम साधनों से लैस हैं। वास्तव में हो यह रहा है कि विज्ञान और तकनीकी साधनों के बढ़ने से धर्म-कर्म के बारे में रूढ़ियां घटने की बजाय बढ़ती जा रही हैं। संचार

के साधनों की अंध श्रद्धा बढ़ाने में क्या भूमिका है, यह जानने के लिए एक उदाहरण काफी है। 1995 की बात है, कहीं से यह खबर आई कि गणेश जी साक्षात दूध पी रहे हैं। बस क्या था, गणेश मंदिरों में दुग्धप्राशन कराने वालों का तांता लग गया। यह खबर चली कहां से थी, यह नहीं मालूम। लेकिन जंगल की आग की तरह घंटे भर मं देश के करीब सभी महानगरों, शहरों और कस्बों में पहुंच गई। जिसे भी यह ख़बर मिली वह बिना सोचे-समझे पास के मंदिर में दूध पिलाने पहुंच गया। ऐसे देश का लाखों लीटर दूध बरबाद हो गया जहां आज भी करोड़ों बच्चों को एक बूंद दूध नसीब नहीं हो पाता। यह है हमारी अंधश्रद्धा कानमूना। धर्म नितांत वैयक्तिक मामला है। ईश्वर पर विश्वास एक बात है तथा अवैज्ञानिकता के चलते दूध पिलाना दूसरी बात है। लेकिन आज धर्म और आस्था का घनघोर प्रदर्शन हो रहा है। कुछ धार्मिक चैनल तो चौबीसों घंटे यह ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं। भावी पीढ़ी कैसी होगी, कल्पना की जा सकती है।

अब तो घर बैठे इंटरनेट के जरिए ऑनलाइन पूजा, आरती और कुंभ स्नान भी किया जा सकता है। वेबसाइट पर सारी सुविधाएं मौजूद हैं। ये चीजें बताती हैं कि धार्मिक चेतना किस तरह विज्ञान युग में भी प्रसार कर रही है। बंबइया फिल्मों ने आम जनता में मौजूद अंधविश्वासों और रूढ़ियों का बखूबी दोहन किया है। बालीवुड की फिल्मों के कथानक में जादू-टोना, पुनर्जन्म और दैवीशक्तियों की बातें बड़ी आम हैं। उन्होंने तो सांपों के बारे में फैले मिथ का जमकर नगदीकरण किया है। सांपों पर बनी फिल्में चली भी खूब हैं।

भारत जैसे पारंपरिक देश में जनमानस में वैज्ञानिक चेतना पैदा करना कोई सरल कार्य नहीं है। मीडिया की इस में सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। वैज्ञानिक समुदाय को इसमें अपने दायित्व का निर्वहन करना पड़ेगा। विज्ञान लेखकों द्वारा देश भर में व्याख्यान, पोस्टर, प्रदर्शन, चर्चा, बहस करने की आवश्यकता है। यह निरंतर चलने वाला कार्यक्रम होगा। यह सब जनभाषा में होना चाहिए। विज्ञान जत्था गांव-गांव घूमे, हाथ की सफाई से भोली-भाली जनता को गुमराह करने वालों का भंडाफोड़ करे। लोगों को तांत्रिकों, बाबाओं की काली करतूतों से अवगत कराया जाय। तब कहीं धीरे-धीरे लोगों के जेहन में सही बात उतरेगी।

आमतौर पर विज्ञान को कठिन और जटिल समझा जाता है। जबकि, ऐसा है नहीं। अगर विज्ञान को प्रकृति और जीवन से जोड़ कर समझाया जाए तो वह किस्से-कहानियों-सा रोचक लगेगा। कौन नहीं जानना चाहेगा कि सूरज क्या है, तारे क्या हैं, बादल कहाँ से आते हैं, वर्षा क्यों होती है, अन्न कहाँ से आया, फूल क्यों खिलते हैं, बीमारियाँ क्यों होती हैं, धातुएं कहाँ से आईं, कंप्यूटर क्या है, मोबाइल क्या है और यह भी कि हमारा शरीर क्या है? ये बातें रोचक तरीके से बताई जाएं तो सभी समझना चाहेंगे। विज्ञान को आम आदमी तक पहुँचना ही चाहिए।

विज्ञान के सच को फैलाने के लिए हर सम्भव माध्यम का उपयोग किया जाना चाहिए। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जिस तरह अंधविश्वासों को फैलाया जा रहा है, इस पर सरकार को पाबंदी लगानी चाहिए। यह देखना चाहिए कि इससे समाज में अविज्ञान फैल रहा है, अंधविश्वास फैल रहा है। जब विज्ञान का सच मालूम होता है तो लोगों में जागरूकता आती है। इसका एक उदाहरण देना चाहूँगा। 16 फरवरी 1980 को भारत में जब पूर्ण सूर्यग्रहण लगा तो पूरे देश में लोग घरों में बंद रहे। सड़कें खाली थीं। बाहर कोई दिखाई नहीं देता था। ग्रहण का इतना भय था। लेकिन, 25 अक्तूबर 1995 में पूर्ण सूर्यग्रहण लगा तो देश में काफी लोगों ने उसे सुरक्षित तरीके से देखा। तब इतनी जागरुकता आ चुकी थी कि सूर्यग्रहण एक प्राकृतिक घटना है और इससे कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। ये लोग इसलिए सूर्यग्रहण को देखने के लिए तैयार हुए क्योंकि उन्हें ग्रहण का सच मालूम हो गया था।

लेकिन, अगर हम मास मीडिया के माध्यम से इनके खिलाफ अंधविश्वास फैलाते हैं तो मुश्किल होगी। खगोलीय और अन्य प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या तक के लिए टीवी चैनल ज्योतिषियों, टैरो कार्ड और न्यूमरोलॉजी वालों को बुला रहे हैं। अखबारों में भविष्य फल बाँचा जा रहा है। यह सब निराधार है। इसका कोई परीक्षण और प्रयोग नहीं किया गया है, बस आस्था के नाम पर चल रहा है। इसको महसूस किया जाना चाहिए और इसमें कमी लानी चाहिए। कुँडली मिला कर विवाह करने के बावजूद बहू-बेटियों का जीवन संकट में पड़ रहा है क्योंकि कुँडली सुखद जीवन की गारंटी नहीं है। इसके लिए तो आपसी प्रेम और समझ जरूरी है।

रेडियो पर विज्ञान के अनेक सीरियल आ रहे हैं। टेलीविजन पर भी कुछेक कार्यक्रम दिए जा रहे हैं, लेकिन ये नगण्य हैं। उनकी तुलना में अवैज्ञानिक कार्यक्रम कहीं ज्यादा दिए जा रहे हैं. इस समय देश की बड़ी जरूरत है एक विज्ञान चैनल की, जो विज्ञान का प्रचार-प्रसार करे. उसमें यह सुनिश्चित किया जाए कि वह नेशनल ज्योग्राफी या डिस्कवरी की तरह रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री देने वाला चैनल बने। उसमें बच्चों, आम लोगों, विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों की भागीदारी हो। उसका समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि किस कार्यक्रम को दर्शकों ने अधिक देखा। किसको कितनी टीआरपी मिल रही है।

वैज्ञानिकों और विशेषतौर पर भारतीय वैज्ञानिकों की जीवनियाँ बच्चों को बहुत प्रेरित कर सकती हैं। उन्हें जिंदगी में अपने सपने पूरा करने की राह दिखा सकती हैं। प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक मेघनाथ साहा जब इंटर की कक्षा में पढ़ते थे, तब भी नंगे पैर स्कूल जाते थे। एक बार स्कूल में अंग्रेज गवर्नर आया। मेघनाथ को जूता न पहनने के जुर्म में स्कूल से निकाल दिया गया। इसे गर्वनर के प्रति असम्मान माना गया। लेकिन, मेघनाथ के पास तो जूता था ही नहीं, वे कहाँ से पहनते। वे तैर कर नदी पार अपने गाँव जाते थे क्योंकि नाव के लिए पैसे नहीं थे। ऐसे हालतों में भी वे हमारे देश की ही नहीं विश्व की वैज्ञानिक विभूति बने। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सी.वी. रमन, रामानुजन की जीवनियाँ भी ऐसी ही प्रेरणास्पद हैं, जिन्होंने कठिनाइयों में भी कभी हार नहीं मानी।

यह केवल सरकार की ही नहीं हम सबकी जिम्मेदारी है कि विज्ञान की जानकारी का प्रसार करें। हम लोगों को समझाएं कि मनुष्य सिर्फ मनुष्य है। उसमें जाति, धर्म का कोई भेद नहीं है। विज्ञान की इतनी-सी बात हम अभी तक लोगों को नहीं समझा पाए हैं। सच यह है कि मनुष्य की केवल एक जाति है-होमोसेपिएंस।

-निदेशक एवं प्राचार्य,
श्री नेहरू बाल वाटिका उ.मा.वि., नोहर (हनुमानगढ़)
मो. 9414202796